काशी हिंदू विश्वविद्यालय के निर्माण में गुजरात के राजाओं का योगदान

बड़ौदा-नरेश महाराजाधिराज सर सयाजीराव गायकवाड़ (1875-1939) दिनांक 30 नवम्बर 1922 से 31 मार्च 1929 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के द्वितीय कुलाधिपति के पद पर आसीन रहे थे। महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के निर्माण तथा विकास हेतु समय-समय पर विपुल अनुदान-राशि दी, जिनका विवरण इस प्रकार है :

₹1,00,000/- (29.5.1916)
₹2,00,000/- (03.01.1927) (सयाजीराव गायकवाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना हेतु)

बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा प्रदत्त अनुदान से दिनांक 04.01.1927 को काशी हिंदू विश्वविद्यालय-परिसर में गवर्नर जनरल लॉर्ड इर्विन द्वारा सयाजीराव गायकवाड़ पुस्तकालय का शिलान्यास किया गया था।

बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा प्रदत्त 02 लाख रुपये के अनुदान से काशी हिंदू विश्वविद्यालय-परिसर में सयाजीराव गायकवाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना हुई जिसका उद्घाटन दिनांक 04 मार्च 1941 को विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलाधिपति बीकानेर-नरेश महाराजा गंगासिंह तथा तत्कालीन कुलाधिसचिव महामना मालवीयजी द्वारा किया गया।

लिम्बडी रियासत के ठाकुर साहिब श्री सर दौलतसिंहजी जसवन्त सिंहजी (1907-1940) ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना तथा विकास के लिए सन् 1920 के दशक में ₹90,000/- का अनुदान दिया तथा सन् 1937-38 तक वार्षिक अनुदान भी देते रहे।

लिम्बडी रियासत के नाम पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय-परिसर में 'लिम्बडी छात्रावास' का निर्माण किया गया है।

मालवीयजी के विषय में महात्मा गांधी के विचार

अपने देश के सर्वमान्य महापुरुष महात्मा गांधी, महामना मालवीयजी को अपना अग्रज मानते थे और दोनों महापुरुषों में अत्यन्त प्रगाढ़ सम्बन्ध था। गांधीजी ने मालवीयजी को 'भारतभूषण' की सम्मानित उपाधि दी थी। दिनांक 29.6.1919 को गांधीजी ने अहमदाबाद के वनिता आश्रम कन्या पाठशाला के शिलान्यास के अवसर पर मालवीयजी के लिए सर्वप्रथम 'भारतभूषण' शब्द का प्रयोग किया था। [गुजराती, 13.7.1919]

''मालवीयजी से बड़े धर्मात्मा मैंने नहीं देखे। जीवित भारतीयों मे मुझे उनसे ज्यादा भारत की सेवा करनेवाला कोई दिखाई नहीं दिया। पण्डितजी में और मुझमें, दोनों में कैसा सम्बन्ध है? मैं तो दक्षिण अफ्रीका से आया, तभी से उनका पुजारी हूँ। मैंने अपने दुःख अनेक बार उनके आगे रोये हैं और उनसे आश्वासन प्राप्त किया है। वे तो मेरे बड़े भाई के समान हैं।''

—दिनांक 26 नवम्बर, 1920 को बनारस में विद्यार्थियों की सभा में गांधीजी
(महादेव देसाई के यात्रा-वृत्त से उद्धृत)

'जब मैं 1915 में भारत लौटा तभी से उन्हें बहुत करीब से जानता हूँ। उनसे मेरा घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। उन्हें मैं हिंदू-संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों में से मानता हूँ। सनातनी होते हुए भी वे बड़े उदार विचार रखते हैं। वे मुसलमानों के दुश्मन नहीं हैं। किसी के प्रति मन में ईर्ष्या रखना उनके लिए असम्भव ही है। उनका हृदय इतना विशाल है कि उसमें शत्रुओं के लिए भी स्थान है। सत्ता प्राप्त करना उनका उद्देश्य रहा ही नहीं। आज जो शक्ति उन्हें प्राप्त है वह मातृभूमि की दीर्घ और अखण्ड सेवा का फल है। ऐसी सेवा का दावा हममें से बहुत कम लोग कर सकते हैं। उनका और मेरा स्वभाव अलग-अलग है; लेकिन हम दोनों में सगे भाइयों जैसा प्रेम है।'

—दिनांक 29.5.1924 को महात्मा गांधी
[यंग इण्डिया, 29.5.1924, पृ. 177-178; हिंदी नवजीवन, 01.6.1924]

'मैं तो मालवीजी महाराज का पुजारी हूँ। पुजारी कैसे स्तुति के वचन लिख सके? जो कुछ लिखेगा, उसे अपूर्ण सा प्रतीत होगा। मालवीजी के दर्शन सन् 1890 की साल में चित्र द्वारा किया था। वह चित्र विलायत में जो 'इंडिया' पत्र मि. डिगबी निकालते थे, उसमें था। माना जाए कि वही छवि (चित्र या तस्वीर) मैं आज भी देख रहा हूँ। जैसे उनके लिबास में वैसे ही उनके विचार में ऐक्य चला आया है और इस ऐक्य में मैंने माधुर्य और भक्ति पाये हैं। आज मालवीजी के साथ देशभक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है? यौवनकाल से आरंभ करके आज तक उनकी देशभक्ति का प्रवाह अविच्छिन्न चलता आया है। काशी विश्वविद्यालय के मालवीजी प्राण हैं, काशी वि. विद्यालय मालवीजी का प्राण है। यह नरवीर हमारे लिये दीर्घायु हो।'

—महात्मा गांधी
विलायत जाते हुए, 07.9.1931

पं. मदनमोहन मालवीयजी के प्रति प्रमुख उद्गार

''भारतमाता की सेवा में अपना जीवन समर्पित करनेवाले महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी को उनकी जयन्ती पर विनम्र श्रद्धाञ्जलि। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान देने के साथ आज़ादी के आंदोलन में भी अहम भूमिका निभायी। उनकी विद्वत्ता और आदर्श देशवासियों को सदा प्रेरित करते रहेंगे।''

—माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी (दिनांक 25 दिसम्बर, 2019)

'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सच्चे उपासक, महान् स्वतंत्रता सेनानी महामना पं. मदनमोहन मालवीयजी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना कर युवाओं में राष्ट्रीयता व भारतीय संस्कारों को सींचकर एक शिक्षित समाज के निर्माण हेतु आजीवन संघर्ष किया। ऐसे महान युगपुरुष के चरणों में कोटिशः वंदन।'

—माननीय श्री अमितभाई शाह
गृहमन्त्री, भारत सरकार

दान हेतु अनुरोध

आज जो महामना मालवीय मिशन का स्वरूप दिखाई पड़ रहा है, वह महामना के अनुयायियों की श्रद्धा और उनके भावपूर्ण सहयोग से ही सम्भव हो सका है। अपेक्षा की जाती है कि महामना के सपनों के आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए सबका सहयोग बढ़-चढ़कर प्राप्त होता रहेगा। जो भी बन्धु मिशन के कार्यों में अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करना चाहें, उनका हार्दिक स्वागत है। आपके सहयोग से इस संस्था का संचालन सुचारू रूप से हो सकेगा। दान चेक, ड्राफ़्ट या ऑनलाइन ट्रांसफर के माध्यम से **महामना मालवीय मिशन** के नाम से कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है :

Mahamana Malaviya Mission
INDIAN BANK
(CHANDKHEDA, Ahmedabad)
A/c No.: 7398608549
IFSC: IDIB000C164

महामना मालवीय मिशन-गुजरात
महामना मालवीय मिशन-गुजरात
MAHAMANA MALAVIYA MISSION-GUJARAT

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पुराछात्रों द्वारा वर्ष 1978 में दिल्ली में स्थापित
महामना मालवीय मिशन (पंजीयन क्रमांक एस-9978/1979)
की एक इकाई

प्रथम तल, 104, स्वागत स्टेटस 2, न्यू सी.जी. रोड, चाँदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात-382424
दूरभाष : +91 6355971757, +91 8000452799
ई-मेल : missionmalaviya@gmail.com
वेबसाइट : www.malaviyamissiongujarat.com

प्रधान कार्यालय
'मालवीय स्मृति भवन', 52-53, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नयी दिल्ली-110 002
दूरभाष : 011-23238014, 23216184
ई-मेल : malaviyamission@gmail.com, malaviyasmritibhawan@yahoo.com
वेबसाइट : www.malaviyamission.org

महामना मालवीय मिशन-गुजरात

महामना मालवीय मिशन-गुजरात

काशी हिंदू विश्वविद्यालय से शिक्षित और संस्कारित कुछ पुरातन छात्रों ने दिनांक 09 अप्रैल, 1978 को दिल्ली में **महामना मालवीय मिशन** की स्थापना की। महामना मालवीय मिशन एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में विगत 45 वर्षों से देशभर में फैली 29 शाखाओं के माध्यम से **भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीयजी (1861-1946)** की स्मृतियों को संजोने और उनके जीवन-आदर्शों को प्रसारित करने का पुनीत कार्य कर रहा है। विभिन्न सेवा-प्रकल्पों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परम्परा को संरक्षित रखने का प्रयास कर रहा है। दिनांक 25 दिसम्बर 2022 को मिशन की 29वीं शाखा के रूप में अहमदाबाद में गुजरात इकाई का शुभारम्भ हुआ।

लक्ष्य और उद्देश्य

- देश के महान् नेता और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाए रखना।
- राष्ट्रीय समस्याओं, विशेषकर राष्ट्रीय शिक्षा के सम्बन्ध में मालवीयजी के विचारों का प्रसार करना।
- विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परम्परा को संरक्षण और बढ़ावा देना।

कार्यक्रम

- विभिन्न स्तरों पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पुराने छात्रों की बैठकें और सम्मेलन आयोजित करना,
- 25 दिसम्बर को महामना मालवीय जयन्ती, 05 सितम्बर को शिक्षक दिवस तथा वसन्त पञ्चमी को काशी हिंदू विश्वविद्यालय का स्थापना-दिवस और महामना मालवीय मिशन का स्थापना दिवस मनाना,
- राष्ट्रीय महत्त्व के विषयों पर महामना मालवीय स्मृति व्याख्यान का आयोजन करना,
- मालवीय जी के आदर्शों के अनुरूप शिक्षण संस्थान चलाना एवं समान संस्थाओं का सहयोग करना,
- शारीरिक प्रशिक्षण केंद्रों को चलाना और सहायता करना और भारतीय खेलों को बढ़ावा देना,
- राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में लाने के उद्देश्य से समाज के पिछड़े और कमज़ोर वर्गों के उत्थान के लिए सामाजिक समरसता-कार्यक्रम,
- निर्धन, निराश्रित बच्चों को अंगीकृत कर सेवा-प्रकल्प चलाना एवं निर्धन बच्चों की सहायता करना,
- लेख प्रतियोगिता/भाषण प्रतियोगिता आदि आयोजित कर युवाओं में मालवीयजी के आदर्शों के प्रति जागृति पैदा करना,
- समाज की सामाजिक-आर्थिक संस्कृति को विकसित करने की दृष्टि से अनुसंधानोन्मुख परियोजनाएँ शुरू करना।
- महामना मालवीय मिशन, पं. मदनमोहन मालवीय जी के सम्पूर्ण साहित्य पर आधारित मालवीय वाङ्मय परियोजना का संचालन कर रही है।

महामना मालवीय मिशन की स्थापना के बाद प्रत्येक तीन वर्ष पर मिशन के राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया जाता है। मिशन की सदस्यता उनके लिए भी खुली है जो काशी हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र नहीं हैं पर महामना के आदर्शों में श्रद्धा रखते हैं और उसके लिए कार्य करने को तैयार हैं।

महामना मालवीय मिशन के प्रमुख केन्द्रीय पदाधिकारीगण

नाम	पदनाम	मोबाइल नम्बर
इंजी. प्रभुनारायण श्रीवास्तव (लखनऊ)	राष्ट्रीय अध्यक्ष	9794894400
इंजी. हरिशंकर सिंह (नयी दिल्ली)	राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष	9868755059
डॉ. वेदप्रकाश सिंह (नयी दिल्ली)	राष्ट्रीय महासचिव	9312693163
श्री दिनकर कुमार सिंह (नयी दिल्ली)	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	9582216158

महामना मालवीय मिशन, गुजरात-इकाई के प्रमुख पदाधिकारीगण

संरक्षक-मण्डल

डॉ. रमाशंकर दूबे
कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. मोंटूकुमार पटेल
अध्यक्ष, फार्मेसी काउंसिल ऑफ़ इण्डिया

श्री एच.एल. राय
उद्योगपति, मेहसाणा

श्री रंजीत कुमार झा	अध्यक्ष	8000452799
श्री रविशंकर ओझा	महासचिव	9898068682
श्री हितेश भूरिया	कोषाध्यक्ष	9426354529

भारत रत्न भारतभूषण महामना पं. मदनमोहन मालवीय (1861-1946) : एक संक्षिप्त परिचय

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के यशस्वी संस्थापक, सनातनधर्म के पुरोधा, स्वदेशी-स्वराज्य-स्वधर्म-स्वभाषा के प्रबल समर्थक भारत रत्न भारतभूषण महामना पं. मदनमोहन मालवीय (25 दिसम्बर 1861–12 नवम्बर 1946) का कार्यकलाप भारतीय समाजजीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त रहा है। वह एक महान् स्वाधीनता सेनानी, सिद्धान्तप्रिय राजनीतिज्ञ, अग्रणी समाजसुधारक, प्रखर शिक्षाविद्, यशस्वी पत्रकार, अनेक संस्थानों के जन्मदाता, कला-संगीत-साहित्य के मर्मज्ञ होने के साथ एक सफल अधिवक्ता थे। पत्रकारिता के शिखर-पुरुष मालवीय जी ने द इण्डियन यूनियन (अंग्रेज़ी-साप्ताहिक, 1885-1887), हिन्दोस्थान (हिंदी-दैनिक, 1887-1891) एवम् अभ्युदय (हिंदी-साप्ताहिक, 1907-1909)-जैसे पत्रों का सम्पादन किया था। हिंदी-भाषा, नागरी-लिपि और संस्कृत के उत्थान के लिए महामना ने अथक प्रयत्न किये। मालवीयजी के प्रयास से सन् 1884 में हिंदी-उद्धारिणी-प्रतिनिधि-सभा की स्थापना हुई थी। सन् 1927 से 1946 तक वह द हिंदुस्तान टाइम्स के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स के चेयरमैन रहे। अनेकानेक लेख और कविताएं लिखीं। संस्कृत से प्रेम होने के कारण अनेक लेख और अभिलेख संस्कृत में लिखे, जो आज भी देश में कुछ स्थानों पर उत्कीर्ण हैं।

स्वराज्य आन्दोलन के इतिहास में महामना मालवीयजी का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। मालवीयजी सन् 1886 में मात्र 25 वर्ष की आयु में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े और 4 बार (लाहौर, 1909; दिल्ली, 1918; दिल्ली, 1932 और कलकत्ता, 1933) उसके अध्यक्ष चुने गए थे। अखिल भारतीय हिंदू महासभा के वह 6 बार (हरिद्वार, 1905; बनारस, 1923; बेलगांव, 1924; गुवाहाटी, 1926; मद्रास, 1927 और पूना 1935) अध्यक्ष चुने गए थे। मालवीयजी ने श्री माधव श्रीहरि अणे (1880-1968) के साथ कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी का गठन किया था। सन् 1903 से 1910 तक मालवीयजी संयुक्तप्रान्तीय विधानसभा, 1910 से 1920 तक शाही विधानपरिषद् तथा 1924 से 1930 तक केन्द्रीय विधानसभा के निर्वाचित सदस्य रहे। सन् 1901 से 1916 तक इलाहाबाद नगरपालिका के क्रमशः एक सदस्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवम् अध्यक्ष के रूप में उन्होंने इलाहाबाद की भरपूर सेवा की। सन् 1916 से 1918 तक भारतीय औद्योगिक आयोग के सदस्य रहे। मालवीयजी जलियांवाला बाग़ हत्याकाण्ड जांच समिति के अध्यक्ष होने के साथ जलियांवाला बाग़ स्मारक समिति के भी संस्थापक-अध्यक्ष भी थे। सन् 1931 में लन्दन में आयोजित द्वितीय भारतीय गोलमेज सम्मेलन में उन्होंने गांधीजी के साथ कांग्रेस का नेतृत्व किया था।

महामना मालवीय जी एक व्यक्ति नहीं, अपितु संस्था थे। उन्होंने हिंदू समाज (इलाहाबाद, 1880), देशी तिजारत कम्पनी (इलाहाबाद, 1881), मध्य हिंदू समाज (इलाहाबाद, 1885), भारतधर्म महामण्डल (हरिद्वार, 1887), अखिल भारतवर्षीय सनातनधर्म महासभा (इलाहाबाद, 1906), अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन (इलाहाबाद, 1910), अखिल भारतीय सेवा समिति (इलाहाबाद, 1914), श्रीगंगासभा (हरिद्वार, 1916), श्रीदुर्गाणा मन्दिर (अमृतसर, 1924-25), श्रीविश्वनाथ मन्दिर (बनारस), अखिल भारतीय स्वदेशी संघ (बनारस, 1932), अखिल भारतीय विक्रम परिषद् (1943) और हिंदुस्तान स्काउट्स एण्ड गाइड्स एसोसिएशन-जैसी संस्थाएं भी मालवीयजी की देन है। हिंदी, संस्कृत, आयुर्वेद, ज्योतिष, प्राच्यविद्या आदि के सम्मेलनों से भी मालवीयजी सदा जुड़े रहे।

शिक्षा-क्षेत्र में मालवीयजी का अतुलनीय योगदान है। सन् 1889 में उन्होंने इलाहाबाद में भारती भवन पुस्तकालय की स्थापना की। सन् 1899 से 1910 तक वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सीनेट तथा सिण्डिकेट के सदस्य रहे। 1901 में उन्होंने इलाहाबाद में द मैक्डॉनेल यूनिवर्सिटी हिंदू बोर्डिंग हाउस तथा 1904 में गौरी पाठशाला की स्थापना की। सन् 1907 में उन्होंने हरिद्वार में ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम विद्यापीठ की स्थापना की। सन् 1912 में उन्होंने

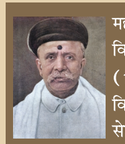

महामना मालवीयजी ने सुप्रसिद्ध गुजराती विद्वान् डॉ. **आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव (1869-1942)** को काशी हिंदू विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफ़ेसर तथा सेण्ट्रल हिंदू स्कूल के प्रिंसिपल पद के लिए आमन्त्रित किया। एक वर्ष बाद डॉ. ध्रुव, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उप कुलपति बनाए गये और 1936 तक इस पद पर आसीन रहे थे।

दिनांक 28 अक्टूबर, 1921 को महामना मालवीयजी ने अहमदाबाद के मज़दूरों और मिल-मालिकों के मध्य विवाद को सुलझाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी और मिल-मालिक को वर्ष के अन्त में मज़दूरों को एक महीने की सैलरी देने के लिये सहमत किया।

इलाहाबाद में सेवा समिति विद्या मन्दिर का शुभारम्भ किया। सन् 1916 में उन्होंने देश के अनेक राजे-महाराजाओं के आर्थिक सहयोग से काशी हिंदू विश्वविद्यालय की नींव रखी जो महामना की कीर्तियों का अक्षय स्मारक है। मालवीयजी सन् 1919 से 1939 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति, तत्पश्चात् देहावसान तक कुलाधिसचिव के पद पर रहे।

महामना मालवीयजी ने विभिन्न रूपों में देश की सेवा की और अनेक बार सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। देश का कोई कोना उनसे अछूता न था। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने देश के अनेक स्थानों पर आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशनों में हिस्सा लिया जिससे उन स्थानों के स्थानीय नेताओं और अन्य श्रेष्ठजनों से उनकी भेंट सहज हो जाती थी। इसी के साथ काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के सिलसिले में भी मालवीयजी ने देशभर का दौरा किया। इसी शृंखला में उनका गुजरात प्रदेश से निकटतम सम्बन्ध रहा है।

दिनांक 03.01.1936 को बड़ौदा के महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय के राज्यारोहण की षष्ठीपूर्ति के उपलक्ष्य में लक्ष्मीविलास पैलेस, बड़ौदा में आयोजित समारोह को मालवीयजी ने सम्बोधित किया था।

मालवीयजी ने गुजरात में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 3 राष्ट्रीय अधिवेशनों में सहभागिता की थी : अहमदाबाद-अधिवेशन (दिसम्बर 1902), सूरत-अधिवेशन (दिसम्बर 1907) और अहमदाबाद-अधिवेशन (दिसम्बर 1921)।

यह महामना मालवीय की लोकप्रियता ही थी कि दिनांक 22 मई, 1925 को अहमदाबाद के हिंदुओं ने हैदराबाद के निजाम द्वारा मालवीयजी के हैदराबाद में प्रवेश-निषेध के विरुद्ध अहमदाबाद में विरोध-प्रदर्शन किया था।